

डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

अहाँक समान अहीं छी बुद्धिगर झूठो भऽ गेल साँच।
एहि दुनियाँमे अहाँ सन के अछि दूधो भऽ गेल छाँछ।।

शिक्षक भेल हाथक झुनझुना बजा बजा सभ खेलए।
बाजत काल्हि वंशक झुनझुना आँखि ने किनको खुलए।।

जाहि देश और जाहि प्रांतमे शिक्षक हएत कमतिया।
शिक्षा केर श्मशान बनत ओ जनमऽत मात्र भनसिया।।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

अपन अदौरी सबसँ नीमन
अनकर बऽड़ी फिक्का
अपन सड़ल दही अछि मिठगर
दोसराक टटका खट्टा।

नीति अनीतक चालि-चलैनसँ
बुझि रहल संसार
झारखंड बनलासँ की
अदिवासी भेल नेहाल।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018


सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

अपना मने खूब नचै छथि
अनको नीक लगैछैन की
ई सोचबाक पलखैत किनका छनि
अपनहि जान गमौता ई।

बुड़बक बेटा रुपैये काबिल
ई कहबी कोनो झुठ्ठे छै
कबिलाहा जब दंड घिचै छथि
बुड़िबकहाकैं कहबै की।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

जुग पुरुष
बाते नहि
करमे होइत छैक।

गाए चरबऽ बला सभ
किसुनमे नहि भऽ
जाएत छैक
ताहि लेल
गोबरधन सेहो उठबऽ
पड़ैत छैक।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

निर्मलीक निर्मलतामे
मनक मलाल सभ मेटा रहल अछि
शिक्षाक ऐ महापंकमे
गामक जिनगी लेटा रहल अछि।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)